

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ  
सतिगुरु तिस का नाउ ॥  
तिस कै संगि सिखु उधरै  
नानक हरि गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥  
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥  
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥  
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥  
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥  
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥  
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥  
गुर का सिखु वडभागी हे ॥  
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥  
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै  
॥१॥

गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥  
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥  
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥  
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥  
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥  
तिसु सेवक के कारज रासि ॥  
सेवा करत होइ निहकामी ॥  
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥  
अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥  
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ  
॥२॥

बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥  
सो सेवकु परमेशुर की गति जानै ॥  
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥  
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥  
सब निधान जीअ का दाता ॥  
आठ पहर पारब्रह्म रंगि राता ॥  
ब्रह्म महि जनु जन महि पारब्रह्मु ॥  
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥  
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥  
नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ  
॥३॥

सफल दरसन पेखत पुनीत ॥  
परसत चरन गति निरमल रीति ॥  
भेटत संगि राम गुन रवे ॥  
पारब्रह्म की दरगह गवे ॥  
सुनि करि बचन करन आधाने ॥  
मनि संतोखु आत्म पतीआने ॥  
पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥  
अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥  
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥  
नानक जिसु भावै तिसु लग मिलाइ  
॥४॥

जिहवा एक उसतति अनेक ॥  
सति पुरख पूरन बिबेक ॥  
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥  
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥  
निराहार निरवैर सुखदाई ॥  
ता की कीमति किनै न पाई ॥  
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥  
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥  
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥  
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने  
॥५॥

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥  
अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥  
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥  
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥  
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥  
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥  
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥  
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥  
अंधकार दीपक परगासे ॥  
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे  
॥६॥

तपति माहि ठाढि वरताई ॥  
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥  
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥  
साधू के पूरन उपदेसे ॥  
भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥  
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥  
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥  
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥  
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥  
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन  
॥७॥



निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥  
कला धारि जिनि सगली मोही ॥  
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥  
अपुनी कीमति आपे पाए ॥  
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥  
सब निरंतरि एको सोइ ॥  
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥  
भए प्रगास साध कै संग ॥  
रचि रचना अपनी कल धारी ॥  
अनिक बार नानक बलिहारी  
॥८॥१८॥